

CHUNILAL GANDHI VIDYABHAVAN  
SURAT.

Manuscripts Library  
S.D.P.B.

Coll. No. 122.

Title VI'SVADEVA.



CHUNILAL GANDHI VIDYABHAVAN, SURAT

Shastri Dinmanishankar Pustak-Bhandara

No. : 122 Subject : Vedic

Title : Vignadeva

Author : — Scribe : <sup>Dev</sup> Jany Krishna Jany Singh

Date of the work : — Date of the Ms. : 1964

Place of the work : — Place of the Ms. : —

Size : 9-2" by 5-3" Extent : 2 full

Language : Sanskrit Script : Devanagari

Remarks : Complete







अथ वे न्योनमः॥ वयो न्योनमः॥ अपसव्यं॥ यक्षौ तत्रे॥ सव्यं॥ आचमनं॥ इ  
 तिवैश्वदेवसमाप्तं॥ ॥ संवत् १९५८ नावर्षे आश्विन शुद्धि आठ मे निशि  
 तं॥ सप्तम्यारवि वारे च जन्म हृदिवसे तथा॥ एते निषिद्धं सति तत्प्राप्तं  
 इति वेद॥ उशि वाय॥ अन्नं न वतु॥ ॥ हवे देव अष्टद्वे शिवरांसे नानि  
 रितं॥ पत्र वे वैश्वदेवनां॥ ॥ श्री॥ क॥ क॥ श्री॥ श्री॥

वैश्वानरस्य सुमताम्यामृता हि कुर्वन्ना नानि श्रीगद तो जातो विश्वं निर्विचये वैश्वानरो यतते त्वयै ला एते दिविष्टो अग्निः शुचिर्गच्छ  
 शो विश्वं शुचिर्गच्छ विवेरो॥ वैश्वानरः सह प्राष्टो अग्निः स नो दिवा सरिषः पातु नक्तं॥ वैश्वानर तव तस्य मत्स्य स्मात्ता यो मघवानः सवतां त  
 नो॥